BHARATIYA SANSKRITI MEIN PARYAVARAN KI AVDHARNA (PANCH TATVA AADHARIT)

REPORT ON INTERNATIONAL VIRTUAL LECTURE SERIES

5TH TO 9TH JUNE,2021

DEPARTMENT OF HISTORY

ORGANIZED BY

DEPARTMENT OF HISTORY
FACULTY OF HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
(INSTITUTE OF ADVANCED STUDIES IN EDUCATION
DEEMED TO BE UNIVERSITY)
SARDARSHAHR, CHURU, RAJASTHAN – 331403

IN COLLABORATION WITH

SHIKSHA SANSKRITI UTTHAN NYAS
NEW DELHI,JAIPUR PRANT

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, प्रान्त-जयपुर
एवं
इतिहास विभाग, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, (मानित विश्वविद्यालय), सरदारशहर
का संयुक्त आयोजन
"पर्यावरण दिवस" विशेष पाँच दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला
भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा
विषय - पंच तत्व आधारित, प्रथम तत्व - पृथ्वी
दिनांक - 5 जून, 2021; सांय - 5 बजे
मुख्य वक्ता
मुख्य अतिथि
आयोजन अध्यक्ष
आयोजन संरक्षक
आयोजक
आयोजन संचालक
संपर्क सूत्र
LIVE

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, प्रान्त-जयपुर
एवं
इतिहास विभाग, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, (मानित विश्वविद्यालय), सरदारशहर
का संयुक्त आयोजन
"पर्यावरण दिवस" विशेष पाँच दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला
भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा
विषय - पंच तत्व आधारित, द्वितीय तत्व - आकाश
दिनांक - 6 जून, 2021; सांय - 5 बजे
मुख्य वक्ता
मुख्य अतिथि
आयोजन अध्यक्ष
आयोजन संरक्षक
आयोजक
आयोजन संचालक
संपर्क सूत्र
LIVE

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, प्रान्त-जयपुर
एवं
इतिहास विभाग, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, (मानित विश्वविद्यालय), सरदारशहर
का संयुक्त आयोजन
"पर्यावरण दिवस" विशेष पाँच दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला
भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा
विषय - पंच तत्व आधारित, तृतीय तत्व - जल
दिनांक - 7 जून, 2021; सांय - 5 बजे
मुख्य वक्ता
मुख्य अतिथि
आयोजन अध्यक्ष
आयोजन संरक्षक
आयोजक
आयोजन संचालक
संपर्क सूत्र
LIVE

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, प्रान्त-जयपुर
इतिहास विभाग, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, (मानित विश्वविद्यालय), सरदारशहर
का संयुक्त आयोजन
"पर्यावरण दिवस" विशेष पाँच दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला
भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा
विषय - पंच तत्व आधारित, चतुर्थ तत्व - अग्नि
दिनांक - 8 जून, 2021; प्रातः - 11 बजे
मुख्य वक्ता
मुख्य अतिथि
आयोजन अध्यक्ष
आयोजन संरक्षक
आयोजक
आयोजन संचालक
संपर्क सूत्र
LIVE

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, प्रान्त-जयपुर
इतिहास विभाग, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, (मानित विश्वविद्यालय), सरदारशहर
का संयुक्त आयोजन
"पर्यावरण दिवस" विशेष पाँच दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला
भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा
विषय - पंच तत्व आधारित, पंचम तत्व - वायु
दिनांक - 9 जून, 2021; प्रातः - 11 बजे
मुख्य अतिथि
मुख्य वक्ता
विशिष्ट अतिथि
आयोजन अध्यक्ष
आयोजन संरक्षक
आयोजक
आयोजन संचालक
संपर्क सूत्र
LIVE

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, प्रान्त-जयपुर

एवं

इतिहास विभाग, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, (मानित विश्वविद्यालय), सरदारशहर

का संयुक्त आयोजन

"भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा"

पंच तत्त्व (पृथ्वी, आकाश, जल, अग्नि, वायु) आधारित

LIVE

"राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस" विशेष पाँच दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला

दिनांक - 5 जून से 9 जून 2021; समय - सांय 5 बजे (5-7 जून), प्रातः 11 बजे (8-9 जून)

श्री अतुल कोठारी
राष्ट्रीय संयोजक, SSUN
नई दिल्ली

श्री गोपाल आर्य
अखिल भारतीय पर्यावरण संयोजक,
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

श्री निम्बाराम
क्षेत्र प्रचारक, राजस्थान,
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

प्रो. एच. डी. चारण
पूर्व कुलपति, BTU,
बीकानेर

श्री कानमल दूगड़
कुलाधिपति, IASE
सरदारशहर

डॉ. चंद्रिमा चटर्जी
वरिष्ठ आचार्य, सिंगापुर
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एंड
डिजाइन सिंगापुर

डॉ. संजय स्वामी
राष्ट्रीय संयोजक, पर्यावरण
शिक्षा, SSUN, नई दिल्ली

श्री हिमांशु दूगड़
अध्यक्ष, गांधी विद्या मंदिर,
सरदारशहर

ब्रिगेडियर अजय पति त्रिपाठी
सचिव, गांधी विद्या मंदिर,
सरदारशहर

प्रो. देवेंद्र मोहन
कुलपति, IASE
सरदारशहर

निवेदक

डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
राजस्थान क्षेत्र संरक्षक,
SSUN

नितिन कासलीवाल
जयपुर प्रान्त संयोजक,
SSUN

डॉ अविनाश पारीक
अधिष्ठाता (FHSS) एवं विभागाध्यक्ष
इतिहास विभाग (IASE)

सम्पर्क

डॉ. मनमोहन सिंह
(7426018139)
डॉ. हार्दिक पाठक
(9602453825)
सुश्री दीपिका सिंह
(9804043850)

"वरदा फाउंडेशन" प्रायोजित

वर्चुअल परिचर्चा

इतिहास विभाग, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), गांधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर

एवं

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, दिल्ली (जयपुर प्रान्त) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

पर्यावरण दिवस पर विशेष पाँच दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला

''भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा''

विषय – पंच तत्व आधारित : प्रथम तत्व – पृथ्वी

दिनांक : 05 मई, 2021 **समय : सांयकाल 05:00 बजे**

कार्यक्रम अनुसूची

क्र.सं.	समय	कार्यक्रम का विवरण
1.	05:00 से 05:05	दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती वन्दना
2.	05:05 से 05:09	संस्था की दैनिक प्रार्थना
3.	05:09 से 05:15	अतिथियों का परिचय एवं स्वागत सम्भाषण, डॉ. अविनाश पारीक, अधिष्ठाता, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय
4.	05:15 से 05:20	विषय की प्रस्तावना एवं संयोजन श्री नितिन कासलीवाल, संयोजक, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, जयपुर प्रान्त
5.	05:20 से 06:00	तकनीकी सत्र – I मुख्य वक्ता – श्री संजय कुमार स्वामी राष्ट्रीय संयोजक ,पर्यावरण शिक्षा, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली
6.	06:00 से 06:20	तकनीकी सत्र – II मुख्य अतिथि उद्बबोधन – माननीय श्री हिमांशु दूगड़ अध्यक्ष, गांधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर
7.	06:20 से 06:30	प्रश्नोत्तरी सत्र एवं परिचर्चा
8.	06:30 से 06:35	अध्यक्षीय उद्बबोधन एवं धन्यवाद – डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, क्षेत्र संरक्षक, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, राज.
9.	06:35 से 06:38	शान्ति पाठ (वैदिक मंत्र द्वारा)

''भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा''
विषय – पंच तत्व आधारित : द्वितीय तत्व – आकाश

दिनांक : 06 मई, 2021 **समय : सांयकाल**

05:00 बजे कार्यक्रम अनुसूची

क्र.सं.	समय	कार्यक्रम का विवरण
1.	05:00 से 05:05	संस्था की दैनिक प्रार्थना
2.	05:05 से 05:12	अतिथियों का परिचय एवं स्वागत सम्भाषण डॉ. अविनाश पारीक, अधिष्ठाता, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय
3.	05:12 से 05:20	विषय की प्रस्तावना एवं संयोजन श्री नितिन कासलीवाल, संयोजक, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, जयपुर प्रान्त
4.	05:20 से 05:50	तकनीकी सत्र – III मुख्य वक्ता – प्रो. चन्द्रिमा चटर्जी, वरिष्ठ आचार्य, सिंगापुर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड डिजाइन, सिंगापुर
5.	05:50 से 06:30	तकनीकी सत्र – IV मुख्य अतिथि उद्बोधन – माननीय श्री हिमांशु दूगड़, अध्यक्ष, गांधी विद्या मन्दिर
6.	06:30 से 06:40	प्रश्नोत्तरी सत्र एवं परिचर्चा
7.	06:40 से 06:50	अध्यक्षीय उद्बोधन एवं धन्यवाद डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, क्षेत्र संरक्षक, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, राज.
8.	06:45 से 06:48	शान्ति पाठ (वैदिक मंत्र द्वारा)

''भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा''
विषय – पंच तत्व आधारित : तृतीय तत्व – जल

दिनांक : 07 मई, 2021 **समय : सांयकाल**

05:00 बजे कार्यक्रम अनुसूची

क्र.सं.	समय	कार्यक्रम का विवरण
1.	05:00 से 05:05	संस्था की दैनिक प्रार्थना
2.	05:05 से 05:12	अतिथियों का परिचय एवं स्वागत सम्भाषण, डॉ. शोभना शर्मा, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, जयपुर प्रान्त
3.	05:12 से 05:20	विषय की प्रस्तावना एवं संयोजन श्री नितिन कासलीवाल, संयोजक, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, जयपुर प्रान्त
4.	05:20 से 05:50	तकनीकी सत्र – V मुख्य वक्ता – माननीय प्रो. एच.डी. चारण पूर्व कुलपति, बीकानेर टेक्निकल यूनिवर्सिटी, बीकानेर
5.	05:50 से 06:20	तकनीकी सत्र – VI मुख्य अतिथि उद्बोधन – माननीय श्री कनकमल दूगड़, कुलाधिपति, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) गांधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर
6.	06:20 से 06:30	प्रश्नोत्तरी सत्र एवं परिचर्चा
7.	06:30 से 06:35	अध्यक्षीय उद्बोधन एवं धन्यवाद – डॉ. अविनाश पारीक, अधिष्ठाता, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय
8.	06:35 से 06:38	शान्ति पाठ (वैदिक मंत्र द्वारा)

''भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा''

विषय – पंच तत्व आधारित : चतुर्थ तत्व – अग्नि

दिनांक : 08 मई, 2021 समय : सांयकाल 11:00 बजे

कार्यक्रम अनुसूची

क्र.सं.	समय	कार्यक्रम का विवरण
1.	11:00 से 11:05	संस्था की दैनिक प्रार्थना
2.	11:05 से 11:12	अतिथियों का परिचय एवं स्वागत सम्भाषण डॉ. अविनाश पारीक, अधिष्ठाता, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय
3.	11:12 से 11:20	विषय की प्रस्तावना एवं संयोजन श्री नितिन कासलीवाल, संयोजक, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, जयपुर प्रान्त
4.	11:20 से 12:10	तकनीकी सत्र – VII मुख्य वक्ता – श्री गोपाल आर्य, राष्ट्रीय संयोजक,अखिल भारतीय पर्यावरण , राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, नई दिल्ली
5.	12:10 से 12:30	तकनीकी सत्र – VIII मुख्य अतिथि उद्धबोधन – ब्रिगेडयर अजयपति त्रिपाठी सचिव, गांधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर
6.	12:30 से 12:40	प्रश्नोत्तरी सत्र एवं परिचर्चा
7.	12:40 से 12:45	अध्यक्षीय उद्धबोधन एवं धन्यवाद डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, क्षेत्र संरक्षक, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, राज.
8.	12:45 से 12:48	शान्ति पाठ (वैदिक मंत्र द्वारा)

''भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा''

विषय – पंच तत्व आधारित : पंचम् तत्व : वायु

दिनांकः 09 जून, 20211 समय – प्रातः 11:00 बजे

कार्यक्रम अनुसूची

क्र.सं.	समय	कार्यक्रम का विवरण
1.	11:00 से 11:10	संस्था की दैनिक प्रार्थना एवं संस्था की गतिविधियों का परिचय विडियों के माध्यम से कराना
2.	11:10 से 11:15	अतिथियों का परिचय एवं स्वागत सम्भाषण डॉ. अविनाश पारीक, अधिष्ठाता, माानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय
3.	11:15 से 11:20	विषय की प्रस्तावना एवं संयोजन श्री नितिन कासलीवाल, संयोजक, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, जयपुर प्रान्त
4.	11:20 से 12:10	तकनीकी सत्र – IX मुख्य वक्ता – माननीय श्री अतुल कोठारी राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली,
5.	12:10 से 12:30	तकनीकी सत्र – X मुख्य अतिथि उद्धबोधन – माननीय प्रो. देवेन्द्र मोहन कुलपति, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), सरदारशहर
6.	12:30 से 12:45	तकनीकी सत्र – XI मुख्य वक्ता – श्री निम्बाराम क्षेत्र प्रचारक राजस्थान, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ
7.	12:45 से 01:00	प्रश्नोत्तरी सत्र एवं परिचर्चा
8.	01:00 से 01:10	प्रतिभागी प्रतिपुष्टि (Feedbck)
9.	01:10 से 01:20	अध्यक्षीय उद्धबोधन एवं धन्यवाद – डॉ. दुर्गा प्रसाद अग्रवाल, क्षेत्र संरक्षक, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, राज.
10.	01:20 से 01:28	शान्ति पाठ (वैदिक मंत्र द्वारा)

पर्यावरण दिवस पर विशेष पाँच दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला

''भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा''

अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला का प्रतिवेदन

विहंगावलोकन

इतिहास विभाग, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), गांधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली जयपुर प्रान्त संयुक्त तत्वावधान में पर्यावरण दिवस पर विशेष पाँच दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला का आयोजन आभासी माध्यम से किया गया। इसका मुख्य शीर्षक ''भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा'' के अन्तर्गत पंच तत्व (पंच महाभूत) आधारित परिचर्चा की गई। भारतीय संस्कृति की अवधारणा में पर्यावरण के पंच तत्वों का ऐतिहासिक एवं समसामयिक महत्व को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक दिन एक विषय को लिया गया जैसे प्रथम दिन पृथ्वी, द्वितीय दिन आकाश, तृतीय दिन जल, चतुर्थ दिन अग्नि एवं पंचम दिन वायु को केन्द्र बिन्दु रखकर पर्यावरण संरक्षण विषय पर दिनांक 5 से 9 जून, 2021 तक विषय विशेषज्ञों के व्याख्यानों का आयोजन किया गया। इस व्याख्यानमाला में देश एवं विदेश के 376 प्रतिभागियों ने पाँच दिनों में आयोजित 11 तकनीकी सत्रों में भाग लिया।

व्याख्यानमाला का उद्धाटन शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के क्षेत्र संरक्षक एवं स्वायत्त शिक्षा के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ने माँ शारदे एवं माँ भारती क समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारम्भ किया। संस्था के संगीत विभाग के सहायक आचार्य श्री जितेन्द्र सैनी एवं श्री सुनील सैनी ने सरस्वती वन्दना एवं संस्था की दैनिक प्रार्थना से कार्यक्रम प्रारम्भ किया।

कार्यक्रम का विस्तृत विवरण

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अन्तर्गत पंच तत्वों पर विस्तार से चर्चा की गई। व्याख्यानमाला के समन्वयक एवं अधिष्ठाता, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय – डॉ. अविनाश पारीक ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत सम्भाषण प्रस्तुत किया। विषय की प्रस्तावना एवं कार्यक्रम का संयोजन शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, जयपुर प्रान्त के संयोजक श्री नितिन कासलीवाल ने किया।

प्रथम तकनीकी सत्र

व्याख्यानमाला के प्रथम दिवस दिनांक 5 जून, 2021 को भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अन्तर्गत पंचतत्व आधारित : **प्रथम तत्व – पृथ्वी** पर विषय विशेषज्ञों ने विस्तृत चर्चा की। व्याख्यानमाला के प्रथम तकनीकी सत्र के मुख्यवक्ता श्री संजय कुमार स्वामी, पर्यावरणविद् एवं राष्ट्रीय संयोजक–पर्यावरण शिक्षा, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली ने धरती माता के गुणों को स्पष्ट करते हुए कहा कि यह हमारी सभी त्रुटियों को क्षमा करते हुए अपने हृदय में धारण किए हुए हैं। आज मानव द्वारा सर्वाधिक दोहन धरती माता का किया जा रहा हैं। खनिज पदार्थ तथा रसायनों के माध्यम से धरती को खोखला कर दिया गया हैं।

द्वितीय तकनीकी सत्र

द्वितीय तकनीकी सत्र में मुख्य अतिथि गांधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर के अध्यक्ष माननीय श्री हिमांशु दूगड़ ने अपने उद्बबोधन में पृथ्वी तत्व का ऐतिहासिक विश्लेषण करते हुए बताया कि पंचमहाभूत पर प्राचीन ऋषियों की खोज अभूतपूर्व थी। आयुर्वेद, वनस्पति विज्ञान, प्राकृतिक विज्ञान और विविध तकनीक आदि का अध्ययन विषय पृथ्वी ही रहा है। इसको सुप्त माना गया है। प्रकृति के साथ नियम, नियंत्रण एवं संतुलन के साथ जीना ही पारलौकिक व्यवहार है। आज धरती बीमार है, यह कब तक मानव के रहने लायक रहेगी? आज यह हमारे सामने यक्ष प्रश्न के रूप में हैं।

व्याख्यानमाला के अन्त में प्रश्नोत्तरी सत्र में प्रतिभागियों ने विषय विशेषज्ञों से प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा शान्त की। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल (क्षेत्र संरक्षक, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, राजस्थान) ने न्यास के विविध विषयों एवं कार्यों को बताते हुए वर्तमान में पृथ्वी माँ की भूमिका को भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण तत्व बताया। अतिथियों एवं प्रतिभागियों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया।

व्याख्यानमाला के द्वितीय दिवस दिनांक – 06 जून, 2021 को भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अन्तर्गत पंचतत्व पर आधारित **द्वितीय तत्व – आकाश** विषय पर गहन चर्चा हुई। सुश्री दीपिका सिंह ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत संभाषण दिया।

तृतीय तकनीकी सत्र

तृतीय तकनीकी सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में सिंगापुर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड डिजाइन, सिंगापुर की वरिष्ठ आचार्या प्रो. चन्द्रिका चटर्जी ने अपने उद्बबोधन में आकाश अर्थात व्यापक जो ध्वनि, वायु और प्रकाश का अधिक प्रयोग करने से दूषित हो रहा है। आज प्रदूषण से पृथ्वी गर्म हो गई है। ओजोन में क्षरण हो रहा है और वातावरण में परिवर्तन आया है। किसी क्षेत्र में बरसात का ज्यादा या एकदम कम होना,तूफान, भूचाल, अंधड़, भूकंप, अकाल और जनधन की हानि हो रही है। संधारणीय विकास में पर्यावरण सुरक्षा को नजर अंदाज करना सभी पंचतत्वों के लिए घातक हैं।

चतुर्थ तकनीकी सत्र

चतुर्थ तकनीकी सत्र में मुख्य अतिथि गांधी विद्या मन्दिर के अध्यक्ष हिमांशु दूगड़ ने अपने उद्बबोधन आकाश तत्व का विश्लेषण करते हुए बताया कि आकाश जो इक इकाई के रूप में व्याप्त हैं। प्रत्येक एक वस्तु व्यापक वस्तु में सम्पृक्तावश नित्य प्रेरित रहना स्वत्व है। व्यापक वस्तु में पारगामी होने का प्रमाण सम्पूर्ण प्रकृति में ऊर्जा–सम्पन्नता एवं क्रियाशीलता हैं। इसलिए सत्ता (व्यापक वस्तु) में सम्पूर्ण एक–एक वस्तु (जड़ और चैतन्य) सम्पृक्त है। जिसका दृष्टा जागृत मानव है। मानव और आधुनिक विज्ञान के इस युग में एटम बम बनाने वाले और जीवन रक्षक दवा का अन्वेषण करने वाले दोनों को ही

वैज्ञानिक की संज्ञा दी जाती हैं। यह कैसे सम्भव हैं? इस प्रश्न का जवाब वैज्ञानिकों ने भली–भांति घर–घर पहुंचाया हैं। प्रकृति डूबी, भीगी एवं धीरी हुई हैं।

व्याख्यानमाला के निदेशक एवं मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान के अधिष्ठाता डॉ. अविनाश पारीक ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया।

व्याख्यानमाला के तृतीय दिवस दिनांक – 7 जून, 2021 को भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अन्तर्गत पंचतत्व पर आधारित **तृतीय तत्व – जल** विषय पर गहन चर्चा हुई। डॉ. शोभना शर्मा, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, जयपुर प्रान्त ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत संभाषण प्रस्तुत किया।

पंचम तकनीकी सत्र

पंचम तकनीकी सत्र के मुख्य वक्ता के रूप में पूर्व कुलपति, बीकानेर टेक्निकल यूनिवर्सिटी, बीकानेर के माननीय प्रो. एच.डी. चारण ने अपने उद्बबोधन में प्रकृति की चार अवस्थाओं जिसमें पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था एवं ज्ञानावस्था की जानकारी देते हुए जल का निमार्ण ऑक्सीजन एवं हाइड्रोजन के सहयोग से बताया। जल से किसी वस्तु के निर्माण का वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। वराहमिहिर के प्रसिद्ध ग्रन्थ वृहत्संहिता में वर्णित जल पर केन्द्रीत 125 सूत्रों की जानकारी दी। जल को व्यर्थ बहाना, दूषित करना और उसके प्रति श्रद्धा का भाव क्षीण होना मानवता के हित में नहीं है।

षष्ठम् तकनीकी सत्र

षष्ठम् तकनीकी सत्र में मुख्य अतिथि उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के कुलाधिपति माननीय श्री कनकमल दूगड़ ने जल तत्व पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भारतीय वांग्मय में द्वादश अवतारों में प्रथम अवतार जल को माना गया हैं। महात्मा गांधी के जल मितव्यता का उदाहरण देकर उसका महत्व समझाया। जापान में किये गये अनुसंधान की जानकारी देते हुए बताया कि जल के पास खड़े होकर यदि हम पवित्र चिन्तन और विचार करते हैं तो जल में सुन्दर आकृतियाँ बनती हैं। यदि हम घृणीत विचार या कार्य करते है तो जल में विकृत मानसिकता युक्त आकृतियाँ बनती हैं। अन्त में कहा कि जल है जो कल है, जल है तो जीवन है।

व्याख्यानमाला के चतुर्थ दिवस दिनांक 8 जून, 2021 को भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अन्तर्गत पंचतत्व पर आधारित चतुर्थ तत्व – अग्नि विषय पर गहन चर्चा हुई। डॉ. अविनाश पारीक ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत संभाषण प्रस्तुत किया।

सप्तम् तकनीकी सत्र

सप्तम् तकनीकी सत्र के मुख्य वक्ता के रूप में अखिल भारतीय पर्यावरण, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के राष्ट्रीय संयोजक श्रीमान गोपाल आर्य ने अपने उद्धबोधन में कहा की भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा में पंचमहाभूतों का ऐतिहासिक महत्व रहा है। धरती माता हमारे जीवन के अस्तित्व का प्रमुख आधार हैं। वेदों में परमात्मा का नाम अग्नि हैं। पर्यावरण को संतुलित रखने में वैदिक काल से ही पंचतत्वों का महत्वपूर्ण स्थान रहा हैं।

अष्टम् तकनीकी सत्र

अष्टम् तकनीकी सत्र के मुख्य अतिथि गांधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर के सचिव बिग्रेडियर अजयपति त्रिपाठी ने अपने उद्धबोधन में ऊर्जा का मुख्य स्त्रोत अग्नि तत्व को बताया। समस्त प्रकार की ऊर्जा चाहे वह सौर ऊर्जा हो या आणविक ऊर्जा या उष्मा ऊर्जा हो, सभी का आधार अग्नि हैं। पर्यावरण संरक्ष्ण के लिए सैनिक छावनी एवं कैम्पस को हरितिमा युक्त बनाने में फौज की भूमिका को स्पष्ट किया।

व्याख्यानमाला के पंचम दिवस एवं समापन समारोह में **दिनांक 9 जून, 2021** को भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अन्तर्गत पंचतत्व पर आधारित पंचम् तत्व – वायु विषय पर गहन चर्चा हुई।डॉ. अविनाश पारीक ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत संभाषण दिया। संयोजक श्री नितिन कासलीवाल ने विषय की प्रस्तावना रखी।

नवम् तकनीकी सत्र

नवम् तकनीकी सत्र के मुख्य वक्ता के रूप में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव श्रीमान अतुल कोठारी ने अपने उद्धबोधन में कहा की भौतिकवादी और भोगवादी संस्कृति ने प्रकृति को भोग का साधन माना। तथाकथित सम्पन्न वर्ग के द्वारा दो तिहाई संसाधनों का उपयोग किया जाता हैं। शहरी लोग ग्रामीण लोगों की अपेक्षा संसाधनों का ज्यादा उपयोग कर प्रकृति को नुकसान पहुँचाते हैं। वर्तमान में प्रकृति एवं पर्यावारण के सभी तत्व दूषित हो रहे है ना हवा शुद्ध है ना जल। वैश्विक महामारी ने हमें सतर्क कर दिया कि ऑक्सीजन अर्थात पेड़ों को लगाना ही नहीं अपितु बचाना भी आवश्यक हैं। आधुनिक विज्ञान समस्या आने के बाद समाधान खोजती है जबकी भारतीय संस्कृति में पूर्व में ही निदान बताकर हमें जागरूक किया गया। परिवार, विद्यालय और समाज की नैतिक जिम्मेदारी हैं कि पर्यावरण विषय के सिद्धान्तों को पढ़ने से समाधान नहीं होगा। वायु एवं अन्य तत्वों सम्बन्धी अनुसंधान और तथ्य प्रस्तुत किये।

दशम् तकनीकी सत्र

दशम् तकनीकी सत्र के मुख्य अतिथि उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के कुलपति माननीय प्रो. देवेन्द्र मोहन ने अपने उद्धबोधन में वायु की उत्पत्ति का क्रम बताते हुए समस्त जीवों के उद्भव के विकास की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला। प्राणवायु सम्बन्धित आंकड़े प्रस्तुत करते हुए कहा कि किस क्षेत्र में किस रूप में प्राणवायु का प्रयोग होता है। हमारे शरीर के लिए कितने प्रतिशत प्राणवायु की आवश्यकता हैं। प्रदूषण के कारणों का उल्लेख करते हुए कहा कि महामारी ने हमे प्रकृति रूपी देवता के प्रति नतमस्तक कर दिया है। पृथ्वी विभिन्न जीवों का संरक्षण एवं पोषण करते हुए अपने खजाने से हमें जीवन देती हैं। अतः श्रद्धापूर्वक हम प्रकृति को नमन करें।

एकादश तकनीकी सत्र

एकादश तकनीकी सत्र में विशिष्ठ अतिथि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, राजस्थान क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम ने कहा कि भारतीय संस्कृति में पंचतत्व व्यावहारिक विषय है। पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रकृ ति के साथ संतुलन एवं समन्वय आवश्यक हैं। हमारी माताओं एवं बहनों द्वारा वैशाख मास में पेड़ों में पानी डालना एवं प्रकृति पूजा की परम्पराएँ हमारी शान रही हैं। अध्यात्म से जोड़कर यह कार्य किया जा रहा हैं। अकबर एवं बीरबल के किस्सों के माध्यम से वनस्पति के ज्ञान से अवगत कराया गया।

प्रश्नोत्तरी सत्र में प्रतिभागियों ने विषय विशेषज्ञों से प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासाएँ शान्त की। व्याख्यानमाला के अनुभव तथा प्रतिपुष्टि को डॉ. कंचन शर्मा, डॉ. फारूख चौहान एवं डॉ. यश जयसवाल द्वारा प्रस्तुत किया गया। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, राजस्थान के क्षेत्र संरक्षक डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ने अध्यक्षीय उद्धबोधन एवं धन्यवाद दिया। आयोजक संचालन डॉ. मनमोहन सिंह, डॉ. हार्दिक पाठक, सुश्री दीपिका सिंह, श्री शान्तिप्रकाश दूगड़ एवं श्री सुरेन्द्र जोशी ने तकनीकी सहयोग किया। शान्तिपाठ एवं वैदिक मंत्रोंचार के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

SOME GLIMPSES OF INTERNATIONAL VIRTUAL LECTURE SERIES 2021

IASE Deemed to be University, GVM, Sar...

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास
देश को
को बदलें।

sanjay swami

Dp agawwal

IASE Deemed to be Univers...
IASE (Deemed to be Unive...

zoom
zoom

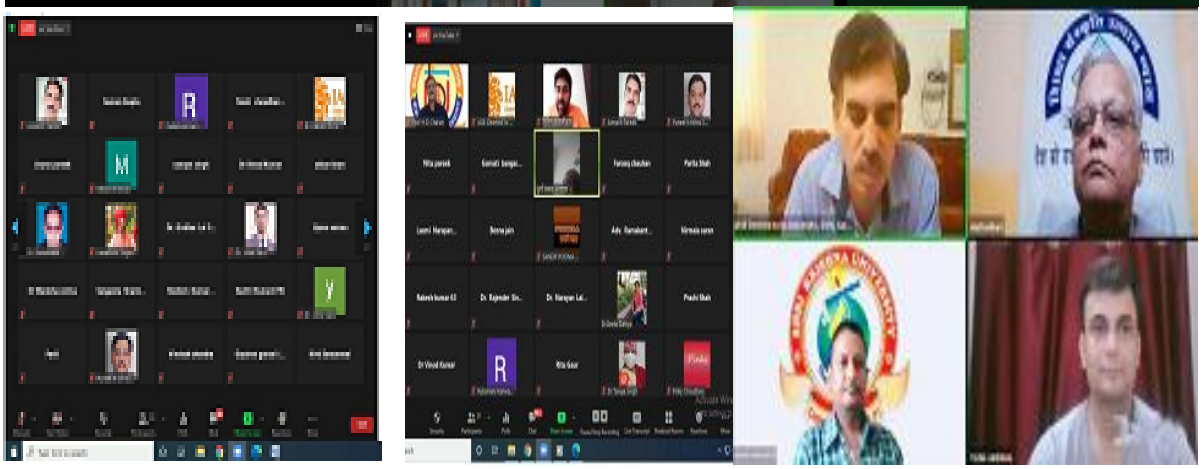

परस्पर पूरकता का संबंध
पदार्थ अवस्था एवं प्राण अवस्था के बीच
परस्पर सम्बद्ध, एक दूसरे पर आश्रित
परस्पर पूरकता
1. चक्रीय (आवर्तनशील)
2. हर इकाई समृद्ध होती है
प्राण
अवस्था
पेड़, पौधे
पदार्थ
अवस्था
मिट्टी, धातु
परस्पर पूरकता = परस्परता + पूरकता
Mutual Fulfillment = Relatedness + Fulfillment
zoom

Light Pollution
Brighter nights
Streetlights send a lot of light up into the sky
Fewer stars are visible
Affects the ecosystem
Disturbs the sleep patterns of nocturnal animals like owls and bats.
Negatively impacts the behavior
Hong Kong
Las Vegas
Singapore

NEWS PAPER CUTTINGS

दैनिक
केन्द्र सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त
न्यूज ज्योति
07.06.2021
जन जन की आवाज
मदन मोहन आचार्य न्यूज ब्यूरो चीफ चूरू

प्रकृति के साथ नियम, नियंत्रण एवं संतुलन के साथ जीना ही पारलौकिक व्यवहार है- हिमांशु दूगड़

न्यूज ज्योति

सादुलपुर। इतिहास विभाग ,उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय),गांधी विद्या मंदिर ,सरदारशहर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिगी ,प्रांत जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस के उपलक्ष पर भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अंतर्गत पंचतत्व पर आधारित प्रथम तत्व - पृथ्वी विषय पर आभासी माध्यम से पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में व्याख्यानमाला के निदेशक मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता डॉ. अविनाश पारीक ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। व्याख्यानमाला एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास,जयपुर प्रांत के संयोजक एडवोकेट श्री नितिन कासलीवाल ने व्याख्यानमाला के विषय की प्रस्तावना रखी एवं सफल संचालन किया। तकनीकी सत्र में मुख्य अतिथि गांधी विद्या मंदिर के अध्यक्ष हिमांशु दूगड़ ने अपने उद्बोधन में पृथ्वी तत्व का विश्लेषण करते हुए बताया कि पंचमहाभूत पर प्राचीन ऋषियों की खोज अभूतपूर्व थी ।आयुर्वेद ,वनस्पति विज्ञान ,प्राकृतिक विज्ञान और विविध तकनीक आदि का अध्ययन विषय पृथ्वी ही रहा है ।इसको सुप्त माना गया है। प्रकृति के साथ नियम ,नियंत्रण एवं संतुलन के साथ जीना ही पारलौकिक व्यवहार है ।आज धरती बीमार है वह कब तक मानव के रहने लायक रहेगी यह हमारे सामने यक्ष प्रश्न के रूप में है? व्याख्यानमाला के द्वितीय सत्र में शिक्षा निदेशालय ,दिगी के शिक्षाविद एवं पर्यावरणप्रेमी संजय कुमार स्वामी ने धरती माता के गुणों को स्पष्ट करते हुए कहा कि यह हमारी सभी त्रुटियों को क्षमा करते हुए अपने हृदय पर धारण किए हुए हैं। आज मानव द्वारा सर्वाधिक दोहन धरती माता का किया जा रहा है ।खनिज पदार्थ तथा रसायनों के माध्यम से धरती को खोखला कर दिया गया है।कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास राजस्थान के क्षेत्रीय संरक्षक डॉ. दुर्गा प्रसाद अग्रवाल ने न्यास के विविध विषयों एवं कार्यों को बताते हुए वर्तमान में पृथ्वी मां की भूमिका को भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण तत्व बताया। प्रश्नोत्तर सत्र में प्रतिभागियों ने अतिथि वक्ताओं से प्रश्न पूछ कर अपनी जिज्ञासा शांत की। आयोजन संरक्षक आईएएसई (मानित विश्वविद्यालय) के कुलपति प्रो.देवेंद्र मोहन एवं गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद की पूर्व अधिष्ठाता प्रो. पुष्पा मोतियानी आदि का सानिध्य रहा। डॉ.मनमोहन सिंह, डॉ. हार्दिक पटेल एवं सुश्री दीपिका सिंह ने तकनीकी एवं सफल संचालन में सहयोग किया।

प्रकृति के साथ नियम, नियंत्रण एवं संतुलन के साथ जीना ही पारलौकिक व्यवहार है- हिमांशु दूगड़

सरदारशहर,(हुक्मनामा समाचार)। इतिहास विभाग ,उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान ,गांधी विद्या मंदिर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली ,प्रांत जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस के उपलक्ष पर भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अंतर्गत पंचतत्व पर आधारित प्रथम तत्व –पृथ्वी विषय पर आभासी माध्यम से पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में व्याख्यानमाला के निदेशक मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता डॉ. अविनाश पारीक ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। व्याख्यानमाला एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास,जयपुर प्रांत के संयोजक एडवोकेट श्री नितिन कासलीवाल ने व्याख्यानमाला के विषय की प्रस्तावना रखी एवं सफल संचालन किया। तकनीकी सत्र में मुख्य अतिथि गांधी विद्या मंदिर के अध्यक्ष हिमांशु दूगड़ ने अपने उद्बोधन में पृथ्वी तत्व का विश्लेषण करते हुए बताया कि पंचमहाभूत पर प्राचीन ऋषियों की खोज अभूतपूर्व थी । प्रकृति के साथ नियम ,नियंत्रण एवं संतुलन के साथ जीना ही पारलौकिक व्यवहार है ।आज धरती बीमार है वह कब तक मानव के रहने लायक रहेगी यह हमारे सामने यक्ष प्रश्न के रूप में है? व्याख्यानमाला के द्वितीय सत्र में शिक्षा निदेशालय ,दिल्ली के शिक्षाविद एवं पर्यावरणप्रेमी संजय कुमार स्वामी ने धरती माता के गुणों को स्पष्ट करते हुए कहा कि यह हमारी सभी त्रुटियों को क्षमा करते हुए अपने हृदय पर धारण किए हुए हैं। आज मानव द्वारा सर्वाधिक दोहन धरती माता का किया जा रहा है ।कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास राजस्थान के क्षेत्रीय संरक्षक डॉ. दुर्गा प्रसाद अग्रवाल ने वर्तमान में पृथ्वी मां की भूमिका को भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण तत्व बताया। प्रश्नोत्तर सत्र में प्रतिभागियों ने अतिथि वक्ताओं से प्रश्न पूछ कर अपनी जिज्ञासा शांत की। आयोजन संरक्षक आईएएसई (मानित विश्वविद्यालय) के कुलपति प्रो.देवेंद्र मोहन एवं गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद की पूर्व अधिष्ठाता प्रो. पुष्पा मोतियानी आदि का सानिध्य रहा।

जयपुर टाइम्स
9
प्रादेशिक

प्रकृति के साथ नियम, नियंत्रण एवं संतुलन के साथ जीना ही पारलौकिक व्यवहार है- दूगड़

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निसं)। इतिहास विभाग, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय),गांधी विद्या मंदिर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, प्रांत जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस के उपलक्ष पर भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अंतर्गत पंचतत्व पर आधारित प्रथम तत्व -पृथ्वी विषय पर आभासी माध्यम से पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में व्याख्यानमाला के निदेशक मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता डॉ. अविनाश पारीक ने अतिथियों का

परिचय एवं स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। व्याख्यानमाला एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, जयपुर प्रांत के संयोजक एडवोकेट नितिन कासलीवाल ने व्याख्यानमाला के विषय की प्रस्तावना रखी एवं सफल संचालन किया। तकनीकी सत्र में मुख्य अतिथि गांधी विद्या मंदिर के अध्यक्ष हिमांशु दूगड़ ने अपने उद्बोधन में पृथ्वी तत्व का विश्लेषण करते हुए बताया कि पंचमहाभूत पर प्राचीन ऋषियों की खोज अभूतपूर्व थी आयुर्वेद, वनस्पति विज्ञान, प्राकृतिक विज्ञान और विविध तकनीक आदि का अध्ययन विषय पृथ्वी ही रहा है। इसको सुप्त माना गया है। प्रकृति के साथ नियम, नियंत्रण एवं संतुलन के साथ जीना ही पारलौकिक व्यवहार है। आज धरती बीमार है वह कब तक मानव के रहने लायक रहेगी यह हमारे सामने यक्ष प्रश्न के रूप में है। व्याख्यानमाला के द्वितीय सत्र में शिक्षा निदेशालय, दिल्ली के शिक्षाविद एवं पर्यावरण प्रेमी संजयकुमार स्वामी ने धरती माता के गुणों को स्पष्ट करते हुए कहा कि यह हमारी सभी त्रुटियों को क्षमा करते हुए अपने हृदय पर धारण किए हुए हैं। आज मानव द्वारा सर्वाधिक दोहन धरती माता का किया जा रहा है। खनिज पदार्थ तथा रसायनों के माध्यम से धरती को खोखला कर दिया गया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास राजस्थान के क्षेत्रीय संरक्षक डॉ. दुर्गा प्रसाद अग्रवाल ने न्यास के विविध विषयों एवं कार्यों को बताते हुए वर्तमान में पृथ्वी मां की भूमिका को भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण तत्व बताया। प्रश्नोत्तर सत्र में प्रतिभागियों ने अतिथि वक्ताओं से प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा शांत की। आयोजन संरक्षक आईएएसई (मानित विश्वविद्यालय) के कुलपति प्रो.देवेंद्र मोहन एवं गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद की पूर्व अधिष्ठाता प्रो. पुष्पा मोतियानी आदि का सानिध्य रहा। डॉ.मनमोहन सिंह, डॉ. हार्दिक पटेल एवं सुश्री दीपिका सिंह ने तकनीकी एवं सफल संचालन में सहयोग किया।

प्रकृति के साथ नियम, नियंत्रण एवं संतुलन के साथ जीना ही पारलौकिक व्यवहार है- हिमांशु दूगड़

सरदारशहर। इतिहास विभाग ,उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान ,गांधी विद्या मंदिर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली ,प्रांत जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस के उपलक्ष पर भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अंतर्गत पंचतत्व पर आधारित प्रथम तत्व –पृथ्वी विषय पर आभासी माध्यम से पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में व्याख्यानमाला के निदेशक मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता डॉ. अविनाश पारीक ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। व्याख्यानमाला एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास,जयपुर प्रांत के संयोजक एडवोकेट श्री नितिन कासलीवाल ने व्याख्यानमाला के विषय की प्रस्तावना रखी एवं सफल संचालन किया। तकनीकी सत्र में मुख्य अतिथि गांधी विद्या मंदिर के अध्यक्ष हिमांशु दूगड़ ने अपने उद्बोधन में पृथ्वी तत्व का विश्लेषण करते हुए बताया कि पंचमहाभूत पर प्राचीन ऋषियों की खोज अभूतपूर्व थी। प्रकृति के साथ नियम ,नियंत्रण एवं संतुलन के साथ जीना ही पारलौकिक व्यवहार है। आज धरती बीमार है वह कब तक मानव के रहने लायक रहेगी यह हमारे सामने यक्ष प्रश्न के रूप में है? व्याख्यानमाला के द्वितीय सत्र में शिक्षा निदेशालय ,दिल्ली के शिक्षाविद एवं पर्यावरणप्रेमी संजय कुमार स्वामी ने धरती माता के गुणों को स्पष्ट करते हुए कहा कि यह हमारी सभी त्रुटियों को क्षमा करते हुए अपने हृदय पर धारण किए हुए हैं। आज मानव द्वारा सर्वाधिक दोहन धरती माता का किया जा रहा है ।कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास राजस्थान के क्षेत्रीय संरक्षक डॉ. दुर्गा प्रसाद अग्रवाल ने वर्तमान में पृथ्वी मां की भूमिका को भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण तत्व बताया। प्रश्नोत्तर सत्र में प्रतिभागियों ने अतिथि वक्ताओं से प्रश्न पूछ कर अपनी जिज्ञासा शांत की। आयोजन संरक्षक आईएएसई (मानित विश्वविद्यालय) के कुलपति प्रो.देवेंद्र मोहन एवं गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद की पूर्व अधिष्ठाता प्रो. पुष्पा मोतियानी आदि का सानिध्य रहा। डॉ.मनमोहन सिंह, डॉ. हार्दिक पटेल एवं दीपिका सिंह ने तकनीकी एवं सफल संचालन में सहयोग किया।

चूरू पत्रिका 06 राजस्थान पत्रिका patrika.com

सरदारशहर, सादुलपुर, सुजानगढ़, रतनगढ़, तारानगर, राजलदेसर, लाडनूं

पर्यावरण संरक्षण की जताई आवश्यकता

प्रकृति के नियम के साथ जीना पारलौकिक व्यवहार

पत्रिका सोशल ग्राउंड

आचार्य न्यूज सादुलपुर

जागरूक टाइम्स

मदन मोहन आचार्य न्यूज ब्यूरो चीफ चूरू

08.06.2021

पांच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय व्याख्यानमाला में आकाश तत्व पर गहन चर्चा

संधारणीय विकास में पर्यावरणीय सुरक्षा को नजरअंदाज करना सभी पंचतत्वों के लिए घातक : चटर्जी

जागरूक टाइम्स संवाददाता

सादुलपुर। इतिहास विभाग, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, प्रांत जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में दूसरे दिन भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अंतर्गत पंचतत्व पर आधारित द्वितीय तत्व-आकाश विषय पर आभासी माध्यम से पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला में आकाश तत्व पर गहन चर्चा की गई। व्याख्यानमाला एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, जयपुर प्रांत के संयोजक एडवोकेट नितिन कासलीवाल ने व्याख्यानमाला के विषय की प्रस्तावना रखी एवं सफल संचालन किया। अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला के प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में सिंगापुर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एंड डिजाइन, सिंगापुर की वरिष्ठ आचार्य डॉ. चंद्रिमा चटर्जी ने अपने उद्बोधन में आकाश अर्थात व्यापक जो आज ध्वनि, वायु और प्रकाश का अधिक प्रयोग करने से दूषित हो रहा है। आज प्रदूषण से पृथ्वी गर्म हो गई है। ओजोन में क्षरण हो रहा है और वातावरण में परिवर्तन आया है। संधारणीय विकास में पर्यावरणीय सुरक्षा को नजर अंदाज करना सभी पंचतत्वों के लिए घातक है। द्वितीय तकनीकी सत्र में मुख्य अतिथि गांधी विद्या मंदिर के अध्यक्ष हिमांशु दूगड़ ने आकाश तत्व का विश्लेषण करते हुए बताया कि आकाश जो एक इकाई के रूप में व्याप्त है। व्यापक वस्तु में पारगामी होने का प्रमाण संपूर्ण प्रकृति में ऊर्जा संपन्नता एवं क्रियाशीलता है। मानव और आधुनिक विज्ञान के तकनीकी आविष्कारों ने धरती को बीमार किया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास राजस्थान के क्षेत्रीय संरक्षक एवं शिक्षाविद् डॉ. दुर्गा प्रसाद अग्रवाल ने वर्तमान परिदृश्य में पर्यावरण की स्थिति पर प्रकाश डाला। प्रश्नोत्तर सत्र में प्रतिभागियों ने अतिथि वक्ताओं से प्रश्न पूछ कर अपनी जिज्ञासा शांत की। व्याख्यानमाला के निदेशक तथा मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता डॉ. अविनाश पारीक ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया। आयोजन संचालक डॉ.मनमोहन सिंह एवं डॉ. हार्दिक पाठक ने तकनीकी सहयोग किया।

संधारणीय विकास में पर्यावरणीय सुरक्षा को नजर अंदाज करना सभी पंचतत्वों के लिए घातक है - डॉ.चंद्रिका चटर्जी

समर सहारा

सरदारशहर/मुन्नालाल राव। इतिहास विभाग ,उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, प्रांत जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में दूसरे दिन-भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अंतर्गत पंचतत्व पर आधारित द्वितीय तत्व -आकाश-विषय पर आभासी माध्यम से पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला में आकाश तत्व पर गहन चर्चा की गई। संस्था की दैनिक प्रार्थना से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। सुश्री दीपिका सिंह ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत संभाषण दिया। व्याख्यानमाला एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास,जयपुर प्रांत के संयोजक एडवोकेट श्री नितिन कासलीवाल ने व्याख्यानमाला के विषय की प्रस्तावना रखी एवं सफल संचालन किया। अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला के प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता

के रूप में सिंगापुर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एंड डिजाइन , सिंगापुर की वरिष्ठ आचार्य डॉ. चंद्रिमा चटर्जी ने अपने उद्बोधन में आकाश अर्थात व्यापक जो आज ध्वनि, वायु और प्रकाश का अधिक प्रयोग करने से दूषित हो रहा है । आज प्रदूषण से पृथ्वी गर्म हो गई है। ओजोन में क्षरण हो रहा है और वातावरण में परिवर्तन आया है । संधारणीय विकास में पर्यावरणीय सुरक्षा को नजर अंदाज करना सभी पंचतत्वों के लिए घातक है। द्वितीय तकनीकी सत्र में मुख्य अतिथि गांधी विद्या मंदिर के अध्यक्ष हिमांशु दूगड़ ने अपने उद्बोधन में आकाश तत्व का विश्लेषण करते हुए बताया कि आकाश जो एक इकाई के रूप में व्याप्त है। व्यापक वस्तु में पारगामी होने का प्रमाण संपूर्ण प्रकृति में उर्जासंपन्नता एवं क्रियाशीलता है । मानव और आधुनिक विज्ञान के तकनीकी आविष्कारों ने धरती को बीमार किया है ।विज्ञान के इस युग में एटम बम बनाने वाले और जीवन रक्षक दवा का अन्वेषण करने वाले दोनों को ही वैज्ञानिक की संज्ञा दी जाती है। यह कैसे संभव है ? प्रकृति डूबी, भीगी एवं घिरी हुई है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास राजस्थान के क्षेत्रीय संरक्षक एवं शिक्षाविद डॉ. दुर्गा प्रसाद अग्रवाल ने वर्तमान परिदृश्य में पर्यावरण की स्थिति पर प्रकाश डाला।प्रश्नोत्तर सत्र में प्रतिभागियों ने अतिथि वक्ताओं से प्रश्न पूछ कर अपनी जिज्ञासा शांत की।

संधारणीय विकास में पर्यावरणीय सुरक्षा को नजर अंदाज करना सभी पंचतत्वों के लिए घातक है -डा.चंद्रिका चटर्जी

सरदारशहर,(हुक्मनामा समाचार)। इतिहास विभाग ,उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान ,गांधी विद्या मंदिर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली ,प्रांत जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में दूसरे दिन भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अंतर्गत पंचतत्व पर आधारित द्वितीय तत्व –आकाश विषय पर आभासी माध्यम से पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला में आकाश तत्व पर गहन चर्चा की गई। संस्था की दैनिक प्रार्थना से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। सुश्री दीपिका सिंह ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत संभाषण दिया। व्याख्यानमाला एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास,जयपुर प्रांत के संयोजक एडवोकेट श्री नितिन कासलीवाल ने व्याख्यानमाला के विषय की प्रस्तावना रखी एवं सफल संचालन किया। अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला के प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में सिंगापुर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एंड डिजाइन , सिंगापुर की वरिष्ठ आचार्य डॉ. चंद्रिमा चटर्जी ने अपने उद्बोधन में आकाश अर्थात व्यापक जो आज ध्वनि, वायु और प्रकाश का अधिक प्रयोग करने से दूषित हो रहा है।

07 राजस्थान पत्रिका patrika.com
चूरू, मंगलवार, 08 जून, 2021

सुरक्षा को नजर अंदाज करना घातक

सरदारशहर. इतिहास विभाग, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित

विश्वविद्यालय), गांधी विद्या मंदिर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, प्रांत जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में दूसरे दिन भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अंतर्गत पंचतत्व पर आधारित द्वितीय तत्व -आकाश विषय पर आभासी माध्यम से पांच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय व्याख्यानमाला में आकाश तत्व पर गहन चर्चा की गई। दीपिका सिंह ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत संभाषण दिया। व्याख्यानमाला एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, जयपुर प्रांत के संयोजक एडवोकेट नितिन कासलीवाल, मुख्य वक्ता सिंगापुर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एंड डिजाइन सिंगापुर की वरिष्ठ आचार्य डा.चंद्रिमा चटर्जी, गांधी विद्या मंदिर के अध्यक्ष हिमांशु दूगड़ ने भी विचार व्यक्त किए। अध्यक्षता शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास राजस्थान के क्षेत्रीय संरक्षक डा.दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ने की। व्याख्यानमाला के निदेशक डा.अविनाश पारीक ने अतिथियों का आभार जताया। संचालक डा.मनमोहन सिंह एवं डा.हार्दिक पाठक ने तकनीकी सहयोग किया।

09 राजस्थान पत्रिका patrika.com
चूरू, बुधवार, 09 जून, 2021

भारतीय संस्कृति में जल है तो कल है

सरदारशहर. इतिहास विभाग, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), गांधी विद्या मंदिर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, प्रांत जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में तीसरे दिन भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अंतर्गत पंचतत्व पर आधारित तृतीय तत्व -जल विषय पर आभासी माध्यम से पांच दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय व्या यानमाला में चर्चा की गई। कार्यक्रम के निदेशक एवं अधिष्ठाता डा.अविनाश पारीक ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत संभाषण दिया। व्या यानमाला एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, जयपुर प्रांत के संयोजक एडवोकेट नितिन कासलीवाल ने व्याख्यानमाला के विषय की प्रस्तावना रखी। व्याख्यानमाला के प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता पूर्व कुलपति प्रो.एचडी चारण, द्वितीय तकनीकी सत्र में मुख्य अतिथि उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के कुलाधिपति कनकमल दूगड़ ने भी विचार व्यक्त किए। अध्यक्षता शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास राजस्थान के क्षेत्रीय संरक्षक एवं शिक्षाविद डा.दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ने वर्तमान पर्यावरणीय स्थिति में जल के महत्व पर प्रकाश डाला।

भारतीय संस्कृति में जल है तो कल है, जल है तो जीवन है-दूगड़

सरदारशहर। इतिहास विभाग उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय),गांधी विद्या मंदिर ,सरदारशहर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली ,प्रांत जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में तीसरे दिन भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अंतर्गत पंचतत्व पर आधारित तृतीय तत्व -जल विषय पर आभासी माध्यम से पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला में गहन चर्चा की गई। संस्था की दैनिक प्रार्थना से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम के निदेशक एवं अधिष्ठाता डॉ अविनाश पारीक ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत संभाषण दिया। व्याख्यानमाला एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास,जयपुर प्रांत के संयोजक एडवोकेट नितिन कासलीवाल ने व्याख्यानमाला के विषय की प्रस्तावना रखी एवं सफल संचालन किया। अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला के प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय , बीकानेर के पूर्व कुलपति प्रो.एच डी चारण ने प्रकृति की चार अवस्थाओं जिसमें पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था एवं ज्ञानावस्था की जानकारी दी। जल का निर्माण ऑक्सीजन एवं हाइड्रोजन के सहयोग से हुआ है। जल से किसी वस्तु के निर्माण का वैज्ञानिक प्रमाण नहीं मिलता है।जल का व्यर्थ बहना ,दूषित करना और उसके प्रति श्रद्धा का भाव क्षीण होना मानवता के हित में नहीं है। द्वितीय तकनीकी सत्र में मुख्य अतिथि उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के कुलाधिपति कनकमल दूगड़ ने अपने उद्बोधन में जल तत्व पर विचार व्यक्त करते हुए कहां की भारतीय वांग्मय में द्वादश अवतारों में प्रथम अवतार जल को माना गया है । जापान में किए गए अनुसंधान की जानकारी देते हुए बताया कि जल के पास खड़े होकर यदि हम पवित्र चिंतन और विचार करते हैं तो सुंदर आकृतियां जल में बनती है ।यदि हम धृणीत विचार या कार्य करते हैं तो जल में विकृत मानसिकता युक्त आकृति बनती है । जल हमें पवित्र करता है क्योंकि वह पवित्र है। अंत में कहां की जल है तो कल है ,जल है तो जीवन है।कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास राजस्थान के क्षेत्रीय संरक्षक एवं शिक्षाविद डॉ. दुर्गा प्रसाद अग्रवाल ने वर्तमान पर्यावरणीय स्थिति में जल के महत्व पर प्रकाश डाला एवं अतिथियों तथा प्रतिभागियों का धन्यवाद व्यक्त किया। प्रश्नोत्तर सत्र में प्रतिभागियों ने अतिथि वक्ताओं से प्रश्न पूछ कर अपनी जिज्ञासा शांत की। आयोजन संचालक डॉ.मनमोहन सिंह डॉ. हार्दिक पाठक, शांति प्रकाश दूगड़ एवं सुरेंद्र जोशी ने तकनीकी सहयोग किया।

धरती धोरां री में राजस्थान का समग्र चित्रण-कृष्ण

कटानी रास्ता खुलवाने के लिए ज्ञापन दिया

दवाब व धमकी के चलते युवक के लापता होने का आरोप

जयपुर टाइम्स

भारतीय संस्कृति में जल है तो कल है, जल है तो जीवन है - दूगड़

जयपुर टाइम्स

कस्बे के वार्ड 5 में 102 लोगों का टीकाकरण

जयपुर टाइम्स

भारतीय संस्कृति में जल है तो कल है

सरदारशहर. इतिहास विभाग, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), गांधी विद्या मंदिर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, प्रांत जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में तीसरे दिन भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अंतर्गत पंचतत्व पर आधारित तृतीय तत्व -जल विषय पर आभासी माध्यम से पांच दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय व्या यानमाला में चर्चा की गई। कार्यक्रम के निदेशक एवं अधिष्ठाता डा.अविनाश पारीक ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत संभाषण दिया। व्या यानमाला एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, जयपुर प्रांत के संयोजक एडवोकेट नितिन कासलीवाल ने व्याख्यानमाला के विषय की प्रस्तावना रखी। व्याख्यानमाला के प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता पूर्व कुलपति प्रो.एचडी चारण, द्वितीय तकनीकी सत्र में मुख्य अतिथि उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के कुलाधिपति कनकमल दूगड़ ने भी विचार व्यक्त किए। अध्यक्षता शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास राजस्थान के क्षेत्रीय संरक्षक एवं शिक्षाविद डा.दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ने वर्तमान पर्यावरणीय स्थिति में जल के महत्व पर प्रकाश डाला।

भारतीय संस्कृति में जल है तो कल है ,जल है तो जीवन है - कनक मल दूगड़

सरदारशहर (डॉ. अविनाश पारीक) इतिहास विभाग ,उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय),गांधी विद्या मंदिर ,सरदारशहर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली ,प्रांत जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में तीसरे दिन÷भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अंतर्गत पंचतत्व पर आधारित तृतीय तत्व -जल÷विषय पर आभासी माध्यम से पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला में गहन चर्चा की गई। संस्था की दैनिक प्रार्थना से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम के निदेशक एवं अधिष्ठाता डॉ अविनाश पारीक ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत संभाषण दिया। व्याख्यानमाला एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास,जयपुर प्रांत के संयोजक एडवोकेट श्री नितिन कासलीवाल ने व्याख्यानमाला के विषय की प्रस्तावना रखी एवं सफल संचालन किया। अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला के प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय , बीकानेर के पूर्व कुलपति प्रो.एच डी चरण ने प्रकृति की चार अवस्थाओं जिसमें पदार्थावस्था,प्राणावस्था, जीवावस्था एवं ज्ञानावस्था की जानकारी दी। जल का निर्माण ऑक्सीजन एवं हाइड्रोजन के सहयोग से हुआ है ।जल से किसी वस्तु के निर्माण का वैज्ञानिक प्रमाण नहीं मिलता है।जल का व्यर्थ बहना ,दूषित करना और उसके प्रति श्रद्धा का भाव क्षीण होना मानवता के हित में नहीं है।द्वितीय तकनीकी सत्र में मुख्य अतिथि उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के कुलाधिपति कनक मल दूगड़ ने अपने उद्बोधन में जल तत्व पर विचार व्यक्त करते हुए कहा की भारतीय वांग्मय में द्वादश अवतारों में प्रथम अवतार जल को माना गया है । जापान में किए गए अनुसंधान की जानकारी देते हुए बताया कि जल के पास खड़े होकर यदि हम पवित्र चिंतन और विचार करते हैं तो सुंदर आकृतियां जल में बनती है ।यदि हम धृणीत विचार या कार्य करते हैं तो जल में विकृत मानसिकता युक्त आकृति बनती है । जल हमें पवित्र करता है क्योंकि वह पवित्र है। अंत में कहां की जल है तो कल है ,जल है तो जीवन है।कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास राजस्थान के क्षेत्रीय संरक्षक एवं शिक्षाविद डॉ. दुर्गा प्रसाद अग्रवाल ने वर्तमान पर्यावरणीय स्थिति में जल के महत्व पर प्रकाश डाला एवं अतिथियों तथा प्रतिभागियों का धन्यवाद व्यक्त किया।प्रश्नोत्तर सत्र में प्रतिभागियों ने अतिथि वक्ताओं से प्रश्न पूछ कर अपनी जिज्ञासा शांत की। आयोजन संचालक डॉ.मनमोहन सिंह डॉ. हार्दिक पाठक, शांति प्रकाश दूगड़ एवं सुरेंद्र जोशी ने तकनीकी सहयोग किया।

आचार्य न्यूज सादुलपुर
जागरूक टाइम्स
मदन मोहन आचार्य न्यूज ब्यूरो चीफ चूरू 10.06.2021
पांच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय व्याख्यानमाला

पर्यावरण की अवधारणा में पंच महाभूतों का ऐतिहासिक महत्व रहा : आर्य

सादुलपुर। इतिहास विभाग, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, प्रांत जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में चतुर्थ दिन 'भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अंतर्गत पंचतत्व पर आधारित चतुर्थ तत्व-अग्नि' विषय पर आभासी माध्यम से पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला में गहन चर्चा की गई। अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला के प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में गोपाल आर्य ने कहा कि भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा में पंच महाभूतों का ऐतिहासिक महत्व रहा है। धरती माता हमारे जीवन के अस्तित्व का प्रमुख आधार है। सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ में प्रकट या अप्रकट रूप में अग्नि विद्यमान है। द्वितीय तकनीकी सत्र में अजय पति त्रिपाठी ने पर्यावरण संरक्षण के लिए सैनिक छावनी एवं कैंपस को हरीतिमा युक्त बनाने में फौज की भूमिका को स्पष्ट किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास राजस्थान के क्षेत्रीय संरक्षक शिक्षाविद डॉ. दुर्गा प्रसाद अग्रवाल ने वर्तमान पर्यावरणीय स्थिति में अग्नि के महत्व पर प्रकाश डाला। प्रश्नोत्तर सत्र में प्रतिभागियों ने अतिथि वक्ताओं से प्रश्न पूछ कर अपनी जिज्ञासा शांत की। आयोजन संचालक डॉ.मनमोहन सिंह, डॉ. हार्दिक पाठक, दीपिका सिंह एवं शांति प्रकाश दूगड़ ने तकनीकी सहयोग किया।

» पेज-2

पर्यावरण की अवधारणा में पंच महाभूतों का ऐतिहासिक महत्व रहा है – गोपाल आर्य

सरदारशहर (डॉ. अविनाश पारीक) इतिहास विभाग ,उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय),गांधी विद्या मंदिर ,सरदारशहर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली ,प्रांत जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में चतुर्थ दिन ÷भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अंतर्गत पंचतत्व पर आधारित चतुर्थ तत्व -अग्नि÷ विषय पर आभासी माध्यम से पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला में गहन चर्चा की गई। व्याख्यानमाला के निदेशक एवं अधिष्ठाता डॉ अविनाश पारीक ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत संभाषण दिया। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास,जयपुर प्रांत के संयोजक श्री नितिन कासलीवाल ने व्याख्यानमाला के विषय की प्रस्तावना रखी एवं संयोजन किया। अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला के प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में गोपाल आर्य ,राष्ट्रीय संयोजक, अखिल भारतीय पर्यावरण ,राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा में पंच महाभूतों का ऐतिहासिक महत्व रहा है ।धरती माता हमारे जीवन के अस्तित्व का प्रमुख आधार है ।सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ में प्रकट या अप्रकट रूप में अग्नि विद्यमान है।द्वितीय तकनीकी सत्र में मुख्य अतिथि गांधी विद्या मंदिर के सचिव ब्रिगेडियर अजय पति त्रिपाठी ने अपने उद्बोधन में ऊर्जा का मुख्य स्त्रोत अग्नि तत्व को बताया है। पर्यावरण संरक्षण के लिए सैनिक छावनी एवं कैंपस को हरीतिमा युक्त बनाने में फौज की भूमिका को स्पष्ट किया । कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास राजस्थान के क्षेत्रीय संरक्षक शिक्षाविद डॉ. दुर्गा प्रसाद अग्रवाल ने वर्तमान पर्यावरणीय स्थिति में अग्नि के महत्व पर प्रकाश डाला एवं अतिथियों तथा प्रतिभागियों का धन्यवाद व्यक्त किया।प्रश्नोत्तर सत्र में प्रतिभागियों ने अतिथि वक्ताओं से प्रश्न पूछ कर अपनी जिज्ञासा शांत की। व्याख्यानमाला में वर्दा फाउंडेशन ,जयपुर का भी सहयोग रहा। आयोजन संचालक डॉ.मनमोहन सिंह, डॉ. हार्दिक पाठक, सुश्री दीपिका सिंह एवं शांति प्रकाश दूगड़ ने तकनीकी सहयोग किया।

पर्यावरण की अवधारणा में पंच महाभूतों का ऐतिहासिक महत्व रहा है-गोपाल आर्य

सरदारशहर। इतिहास विभाग ,उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान ,गांधी विद्या मंदिर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, प्रांत जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में चतुर्थ दिन च्भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अंतर्गत पंचतत्व पर आधारित चतुर्थ तत्व–अग्निञ्ज विषय पर आभासी माध्यम से पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला में गहन चर्चा की गई। व्याख्यानमाला के निदेशक एवं अधिष्ठाता डॉ अविनाश पारीक ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत संभाषण दिया। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, जयपुर प्रांत के संयोजक श्री नितिन कासलीवाल ने व्याख्यानमाला के विषय की प्रस्तावना रखी एवं संयोजन किया। अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला के प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में गोपाल आर्य, राष्ट्रीय संयोजक, अखिल भारतीय पर्यावरण, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने अपने उद्बोधन में कहा

कि भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा में पंच महाभूतों का ऐतिहासिक महत्व रहा है । धरती माता हमारे जीवन के अस्तित्व का प्रमुख आधार है। सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ में प्रकट या अप्रकट रूप में अग्नि विद्यमान है। द्वितीय तकनीकी सत्र में मुख्य अतिथि गांधी विद्या मंदिर के सचिव ब्रिगेडियर अजय पति त्रिपाठी ने अपने उद्बोधन में ऊर्जा का मुख्य स्त्रोत अग्नि तत्व को बताया है। पर्यावरण संरक्षण के लिए सैनिक छावनी एवं कैंपस को हरीतिमा युक्त बनाने में फौज की भूमिका को स्पष्ट किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास राजस्थान के क्षेत्रीय संरक्षक शिक्षाविद डॉ. दुर्गा प्रसाद अग्रवाल ने वर्तमान पर्यावरणीय स्थिति में अग्नि के महत्व पर प्रकाश डाला एवं अतिथियों तथा प्रतिभागियों का धन्यवाद व्यक्त किया।प्रश्नोत्तर सत्र में प्रतिभागियों ने अतिथि वक्ताओं से प्रश्न पूछ कर अपनी जिज्ञासा शांत की। व्याख्यानमाला में वर्दा फाउंडेशन, जयपुर का भी सहयोग रहा। आयोजन संचालक डॉ. मनमोहन सिंह, डॉ. हार्दिक, दीपिका सिंह एवं शांति प्रकाश दूगड़ ने तकनीकी सहयोग किया।

पर्यावरण की अवधारणा में पंच महाभूतों का ऐतिहासिक महत्व रहा है - गोपाल आर्य

सरदारशहर,(हुक्मनामा समाचार)। इतिहास विभाग ,उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान ,गांधी विद्या मंदिर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली ,प्रांत जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में चतुर्थ दिन भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अंतर्गत पंचतत्व पर आधारित चतुर्थ तत्व - अग्नि विषय पर आभासी माध्यम से पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला में गहन चर्चा की गई। व्याख्यानमाला के निदेशक एवं अधिष्ठाता डॉ अविनाश पारीक ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत संभाषण दिया। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास,जयपुर प्रांत के संयोजक श्री नितिन कासलीवाल ने व्याख्यानमाला के विषय की प्रस्तावना रखी एवं संयोजन किया।

07 राजस्थान पत्रिका patrika.com
चूरू, गुरुवार, 10 जून, 2021
पत्रिका डिजिटल कनेक्ट
हिर, रतनगढ़, सादुलपुर

पांच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय व्याख्यानमाला

पंच महाभूतों का रहा है महत्व

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सरदारशहर. इतिहास विभाग, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), गांधी विद्या मंदिर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, प्रांत जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में चतुर्थ दिन भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अंतर्गत पंचतत्व पर आधारित चतुर्थ तत्व -अग्नि विषय पर आभासी माध्यम से पांच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय व्याख्यानमाला में चर्चा की गई।

व्याख्यानमाला के निदेशक एवं अधिष्ठाता डा.अविनाश पारीक ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत संभाषण दिया। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, जयपुर प्रांत के संयोजक नितिन कासलीवाल ने व्याख्यानमाला के विषय की प्रस्तावना रखी एवं संयोजन किया। व्याख्यानमाला के प्रथम सत्र में मु य वक्ता के रूप में अखिल भारतीय पर्यावरण, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राष्ट्रीय संयोजक गोपाल आर्य ने कहा कि भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा में पंच महाभूतों का ऐतिहासिक महत्व रहा है। धरती माता हमारे जीवन के अस्तित्व का प्रमुख आधार है । द्वितीय तकनीकी सत्र में मुख्य अतिथि गांधी विद्या मंदिर के सचिव ब्रिगेडियर अजय पति त्रिपाठी ने अपने उद्बोधन में ऊर्जा का मु य स्त्रोत अग्नि तत्व को बताया है। अध्यक्षता करते हुए शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास राजस्थान के क्षेत्रीय संरक्षक शिक्षाविद डा.दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ने वर्तमान पर्यावरणीय स्थिति में अग्नि के महत्व पर प्रकाश डाला। आयोजन संचालक डा.मनमोहन सिंह, डा.हार्दिक पाठक, दीपिका सिंह एवं शांतिप्रकाश दूगड़ ने तकनीकी सहयोग किया।

सरदारशहर में आयोजित व्याख्यानमाला को संबोधित करते गांधी विद्या मंदिर के सचिव ब्रिगेडियर अजय पति त्रिपाठी।

सरदारशहर. उड़सर गांव में आयोजित शिविर में टीकाकरण करते।

संतुलित आहर की दी जानकारी

रतनगढ़. दुधारू पशुओं को संतुलित आहार देने के लिए ऑनलाइन प्रशिक्षण दिया गया। राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय बीकानेर की ओर से संचालित पशु विज्ञान केंद्र रतनगढ़ में ऑनलाइन प्रशिक्षण दिया गया।

केंद्र प्रभारी अधिकारी डॉ. अशोक कुमार ने पशुपालकों को

पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला संपन्न

भौतिकवादी और भोगवादी संस्कृति ने प्रकृति को भोग का साधन माना - अतुल कोठारी

समर सहारा

सरदारशहर/मुकुलपाल राव। इतिहास विभाग, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, प्रांत जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में पंचम दिन -भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अंतर्गत पंचतत्व पर आधारित पंचम तत्व -वायु- विषय पर आभासी माध्यम से पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला में गहन चर्चा की गई। व्याख्यानमाला में वरदा फाउंडेशन, जयपुर का भी सक्रिय सहयोग रहा। व्याख्यानमाला के निदेशक एवं अधिष्ठाता डॉ. अविनाश पारीक ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत संभाषण दिया। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, जयपुर प्रांत के संयोजक नितिन कासलीवाल ने व्याख्यानमाला के विषय की प्रस्तावना रखी एवं संयोजन किया। अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला के प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव अतुल कोठारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भौतिकवादी और भोगवादी संस्कृति ने प्रकृति को भोग का साधन माना। वर्तमान में प्रकृति और पर्यावरण के सभी तत्व दूषित हो रहे हैं।वैश्विक महामारी ने हमें सतर्क कर दिया कि ऑक्सीजन अर्थात पेड़ों को लगाना ही नहीं अपितु बचाना भी आवश्यक है। आधुनिक विज्ञान समस्या आने के बाद समाधान खोजता है, जबकि भारतीय संस्कृति में अध्यात्म के माध्यम से निदान बता कर हमें जागरूक किया गया है। द्वितीय तकनीकी सत्र में मुख्य अतिथि उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मानित विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. देवेंद्र मोहन ने अपने उद्बोधन में वायु की उत्पत्ति का क्रम बताते हुए सभी जीवों के उद्भव के विकास की जानकारी दी। प्रदूषण के कारणों का उल्लेख करते हुए बताया कि कोरोना महामारी ने हमें प्रकृति रूपी देवता के प्रति नतमस्तक कर दिया है। तृतीय तकनीकी सत्र में विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, राजस्थान क्षेत्र प्रचारक निम्बाराम ने कहा कि भारतीय संस्कृति में पंचतत्व व्यावहारिक ऐतिहासिक विषय है। पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रकृति के साथ संतुलन व समन्वय आवश्यक है। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास राजस्थान के क्षेत्रीय संरक्षक डॉ. दुर्गा प्रसाद अग्रवाल ने अतिथियों तथा प्रतिभागियों का धन्यवाद व्यक्त किया। डॉ. कंचन शर्मा, डॉ. फारुख चौहान डॉ. यश जायसवाल ने प्रतिभागियों की तरफ से पांच दिवसीय व्याख्यानमाला के अनुभव एवं फीडबैक को साझा किया।प्रश्नोत्तर सत्र में प्रतिभागियों ने अतिथि वक्ताओं से प्रश्न पूछ कर अपनी जिज्ञासा शांत की। आयोजन संचालक डॉ मनमोहन सिंह, डॉ. हार्दिक पाठक दीपिका सिंह एवं शांति प्रकाश दूगड़ ने तकनीकी सहयोग किया।

भौतिकवादी और भोगवादी संस्कृति ने प्रकृति को भोग का साधन माना - अतुल कोठारी

सरदारशहर,(हुक्मनामा समाचार)। इतिहास विभाग ,उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान ,गांधी विद्या मंदिर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली ,प्रांत जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में पंचम दिन भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अंतर्गत पंचतत्व पर आधारित पंचम तत्व -वायु विषय पर आभासी माध्यम से पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला में गहन चर्चा की गई। व्याख्यानमाला में वरदा फाउंडेशन ,जयपुर का भी सक्रिय सहयोग रहा। व्याख्यानमाला के निदेशक एवं अधिष्ठाता डॉ अविनाश पारीक ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत संभाषण दिया। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास,जयपुर प्रांत के संयोजक श्री नितिन कासलीवाल ने व्याख्यानमाला के विषय की प्रस्तावना रखी एवं संयोजन किया। अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला के प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव अतुल कोठारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भौतिकवादी और भोगवादी संस्कृति ने प्रकृति को भोग का साधन माना ।वर्तमान में प्रकृति और पर्यावरण के सभी तत्व दूषित हो रहे हैं ।वैश्विक महामारी ने हमें सतर्क कर दिया कि ऑक्सीजन अर्थात पेड़ों को लगाना ही नहीं अपितु बचाना भी आवश्यक है ।आधुनिक विज्ञान समस्या आने के बाद समाधान खोजता है, जबकि भारतीय संस्कृति में अध्यात्म के माध्यम से निदान बता कर हमें जागरूक किया गया है ।द्वितीय तकनीकी सत्र में मुख्य अतिथि उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मानित विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. देवेंद्र मोहन ने अपने उद्बोधन में वायु की उत्पत्ति का क्रम बताते हुए सभी जीवों के उद्भव के विकास की जानकारी दी। प्रदूषण के कारणों का उल्लेख करते हुए बताया कि कोरोना महामारी ने हमें प्रकृति रूपी देवता के प्रति नतमस्तक कर दिया है। तृतीय तकनीकी सत्र में विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, राजस्थान क्षेत्र प्रचारक निम्बाराम ने कहा कि भारतीय संस्कृति में पंचतत्व व्यावहारिक ऐतिहासिक विषय है । पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रकृति के साथ संतुलन व समन्वय आवश्यक है। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास राजस्थान के क्षेत्रीय संरक्षक डॉ. दुर्गा प्रसाद अग्रवाल ने अतिथियों तथा प्रतिभागियों का धन्यवाद व्यक्त किया। डॉ. कंचन शर्मा, डॉ. फारुख चौहान डॉ. यश जायसवाल ने प्रतिभागियों की तरफ से पांच दिवसीय व्याख्यानमाला के अनुभव एवं फीडबैक को साझा किया। प्रश्नोत्तर सत्र में प्रतिभागियों ने अतिथि वक्ताओं से प्रश्न पूछ कर अपनी जिज्ञासा शांत की।

09 राजस्थान पत्रिका patrika.com
चूरू, शुक्रवार, 11 जून, 2021

पांच दिवसीय व्याख्यानमाला संपन्न

सरदारशहर. इतिहास विभाग, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), गांधी विद्या मंदिर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, प्रांत जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में पंचम दिन भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा के अंतर्गत पंचतत्व पर आधारित पंचम तत्व -वायु विषय पर आभासी माध्यम से पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला में गहन चर्चा की गई। व्याख्यानमाला में वरदा फाउंडेशन, जयपुर का भी सक्रिय सहयोग रहा। व्याख्यानमाला के निदेशक एवं अधिष्ठाता डा.अविनाश पारीक ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत संभाषण दिया। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास,जयपुर प्रांत के संयोजक नितिन कासलीवाल ने व्याख्यानमाला के विषय की प्रस्तावना रखी। प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव अतुल कोठारी ने कहा कि भौतिकवादी और भोगवादी संस्कृति ने प्रकृति को भोग का साधन माना। द्वितीय तकनीकी सत्र में मुख्य अतिथि उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मानित विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. देवेंद्र मोहन ने वायु की उत्पत्ति का क्रम बताया। तृतीय तकनीकी सत्र में विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ निम्बाराम, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास राजस्थान के क्षेत्रीय संरक्षक डा.दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, डा.कंचन शर्मा, डा.फारुख चौहान डा.यश जायसवाल ने भी विचार व्यक्त किए। आयोजन संचालक डा.मनमोहन सिंह, डा.हार्दिक पाठक, दीपिका सिंह एवं शांति प्रकाश दूगड़ ने तकनीकी सहयोग किया।

(इतिहास विभाग) उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), गाँधी विद्या मंदिर, सरदारशहर

एवं

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली (प्रान्त- जयपुर)

पाँच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला

प्रतिभागिता प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि डॉ./श्री/श्रीमती/कुमारी Dr.kanchan Sharma, Buniyadi shikshak prashikshan mahavidyalay CTE ने दिनांक – 05 जून – 09 जून, 2021 को "पंच तत्व आधारित" के विषय पर आयोजित हुए अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला में सक्रिय रूप से भाग लिया।

प्रो. देवेंद्र मोहन	डॉ. अविनाश पारीक	नितिन कासलीवाल	डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
कुलपति	अधिष्ठाता, मानविकी एवं सामा. विज्ञान संकाय	प्रान्त संयोजक	क्षेत्र संरक्षक
IASE (मानित विश्वविद्यालय)	IASE (मानित विश्वविद्यालय)	शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास (प्रान्त-जयपुर)	शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, राजस्थान
सरदारशहर	सरदारशहर	नई दिल्ली	नई दिल्ली